अध्याय : 7

उपसंहार

उपसंहार

अम्बेडकर सुशिक्षित, सुसंस्कृत गम्भीर विचारक थे। उन्होंने धर्म को केवल वैयक्तिक दृष्टि से नहीं देखा बल्कि अपने करोड़ों उन भाईयों की दृष्टि से देखा जो कि मानव के हरेक अधिकार से हजारों वर्ष से वंचित थे। वह उन्हें मानवोचित अधिकार दिलाना चाहते थे। बौद्ध धर्म के करीब आने पर उन्होंने उसकी मानवोचित अवधारणा अनुभव किया और व्यक्त किया कि 'वह चीज मिल गई जिसे मैं ढूँढ रहा था। बल्कि जितना चाहता था, उससे भी अधिक मात्रा में मिली।' बौद्ध धर्म की उदारता को उन्होंने समझा क्योंकि सामाजिक दृष्टि से वह वर्ण–भेद, जाति–भेद, देश–भेद को नहीं मानता। डॉ. अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म में मानववादी सिद्धान्त को एक सूत्र में बांधने की शक्ति को पहचाना। मानव की चहुँमुखी उन्नति में आस्था रखने वाले डॉ. अम्बेडकर उस धर्म में विश्वास नहीं करते थे, जो शोषण एवं असमता को बढ़ावा देता है। अर्थात् वह धर्म, जो कुछ ही व्यक्तियों के हित का ध्यान रखता है और बहुमत को दुःख देता है। वह केवल उस धर्म के पुजारी थे, जो 'बहुजन सुखाय – बहुजन हिताय' में विश्वास रखता है। – ऐसा धर्म, जो समता पर आधारित है तथा जो मानव–मानव में एकता का भाव उत्पन्न करता है। ये सब बातें बुद्ध के धर्म में मिलती हैं। उनका धर्म पूर्ण न्याय–संगत है। वह मानव–प्रकृति पर आधारित है। उनका विश्वास था कि सामाजिक बुराइयों का अन्त हो सकता है तथा समाज में शान्ति व्यवस्था एवं न्याय का आधिक्य हो सकता है और सामाजिक एकता स्थापित हो सकती है, यदि हम बौद्ध धर्म के मतानुसार तृष्णा का त्याग करें। पंचशील को अपने आचरण में उतारें। पंचशील का अर्थ है –

हिंसा न करना, चोरी न करना, झूठ न बोलना, शराब न पीना और व्यभिचार न करना। अष्टांग–मार्ग एवं पारमिताओं का अनुसरण करें। अष्टांगिक मार्ग में सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्म, सम्यक् आजीविका, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् विचार और सम्यक् समाधि आते हैं। दस पारमिताओं को अपनायें। इनमें शील, दान, उपेक्षा, त्याग, वीर्य, शान्ति, सत्य, अधिष्ठान, करुणा और मैत्री सम्मिलित हैं। उनका मानना है कि इन बातों का अनुसरण किये बिना सदाचार का होना असम्भव है। मनुष्य का दुःख मनुष्य की असमता की भावना के कारण है। केवल सदाचार के द्वारा ही असमता एवं उससे फलित दुःख का अन्त हो सकता है। इसलिए मानव जीवन में सदाचार की सदैव आवश्यकता है। डॉ. अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म के आत्मवाद के सिद्धान्त पर गम्भीर विवेचन किया। दुनियाँ की सभी वास्तविक वस्तुएँ क्षणिक हैं। जो क्षणिक नहीं, वह वास्तविक नहीं। इस अनित्यवाद पर विचार किया दर्शन के तौर पर बौद्ध–धर्म को उन्होंने वर्तमान में भी आधुनिकतम और प्रगतिशील माना।

डॉ. अम्बेडकर ने अनुभव किया कि किसी समय यह मान्यता थी कि बिना सामाजिक क्षमता के अन्य क्षेत्रों में स्थायी प्रगति सम्भव नहीं है। बुरी परम्पराओं के कारण हुई हानि से हिन्दू समाज सामर्थ्यवान नहीं रह गया है और इन बुराइयों के उन्मूलन के लिए अनवरत प्रयास करने की जरूरत है। अछूतों की ऐतिहासिकता से वे अवगत थे। पेशवा के शासन में मराठा देश में सार्वजनिक सड़कों पर कोई अछूत चल नहीं सकता था, अगर उधर से कोई हिन्दू आ रहा होता था क्योंकि अछूत की छाया पड़ने से हिन्दू अशुद्ध हो जाता था। गलती से छू जाने पर कोई हिन्दू अशुद्ध न हो जाये, इसलिए पहचान के तौर पर अछूतों को अपनी कलाई या गले में काला धागा बांधना पड़ता था। पेशवा की राजधानी पूना में अछूतों को कमर में एक झाड़ू बांधना पड़ता था जिसे

उसे वह रास्ता साफ करना पड़ता था ताकि कोई हिन्दू उधर से गुजरे तो वह अशुद्ध न हो। पूना में अछूतों को गले में एक मिट्टी का बर्तन भी बांधना पड़ता था और वह उसी में थूकता था ताकि उसकी थूक जमीन पर गिरने से उधर से गुजरने वाला हिन्दू अशुद्ध न हो जाये। ऐसी स्थिति में डॉ. अम्बेडकर ने अनुभव किया कि सम्पूर्ण अछूत तथा समाज को बौद्ध धर्म की जीवन धारा में लाने के लिए आवश्यक था कि समाज में फैले हुए अंध–विश्वासों और कर्मकाण्डों को दूर किया जाय और स्वस्थ संस्कारों की नींव डाली जाये। इसके अध्ययन हेतु बाबा साहब अम्बेडकर श्रीलंका गये थे और कई दिनों तक वहाँ रूककर उन्होंने उस संस्कार की कार्यविधि को देखा।

डॉ. अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म और भारत की सामाजिक दशा, दोनों का साथ–साथ गहन अध्ययन किया और व्यक्त किया कि सभी अछूत पहले बौद्ध थे। बौद्ध धर्म उनका पैतृक धर्म है। डॉ. अम्बेडकर की यह अभूतपूर्व खोज थी। विशेषता यह है कि उनका यह प्रतिपादित सिद्धान्त आज तक अकाट्य है। धीरे–धीरे बुद्ध के व्यक्तित्व और सिद्धान्तों की ओर बाबा साहब अम्बेडकर का मन उन्मुख होता ही गया। उनकी शिक्षा संस्थाओं से भी इसकी पुष्टि होती है। बम्बई में भगवान बुद्ध के बचपन के 'सिद्धार्थ' नाम पर सिद्धार्थ कॉलेज की स्थापना की गयी। औरंगाबाद में स्थापित कॉलेज का नाम 'मिलिन्द कॉलेज' रखा गया। इस कॉलेज के लिए जो परिसर विकसित किया गया था उसका प्रसिद्ध नाम बौद्ध भिक्षु नागसेन के नाम पर 'नागसेन वन' रखा गया था। यह उल्लेखनीय है कि भिक्षु नागसेन ने यूनानी राजा मिलिन्द मिनेन्डर को अपने दार्शनिक उत्तरों से निरुत्तर कर बौद्ध धर्म में दीक्षित किया था। मिलिन्द कॉलेज की स्थापना औरंगाबाद की बौद्ध गुफाओं के सामने की गयी थीं। पहाड़ी को काटकर इन गुफाओं तथा बुद्ध और बोधिसत्वों की विशाल मूर्तियाँ बनायी गयीं थीं। इन्हीं में से एक गुफा में विशाल बुद्ध

प्रतिमा के सम्मुख बैठकर बाबा साहब अम्बेडकर ध्यान लगाते थे। यहीं नहीं, 'मिलिन्द कॉलेज' से एक ओर अजन्ता की विश्व प्रसिद्ध बौद्ध गुफाएँ हैं और दूसरी ओर एलोरा की प्रसिद्ध गुफाएँ स्थित हैं।

डॉ. अम्बेडकर ने सामाजिक समानता का भाव बुद्ध से ग्रहण किया और वर्ण–भेद को सामाजिक विषमता का मूल मानते हुए उसे मिटाने का प्रयास भी बुद्ध की शिक्षाओं से ही ग्रहण किया। उन्होंने अपने भवन का नाम राजगृह रखा और प्रेस का नाम 'बुद्ध भूषण प्रेस' रखा था। यही नहीं उन्होंने 'प्रबुद्ध भारत' नामक पत्र भी प्रकाशित किया।

25 नवम्बर, 1949 को भारत के संविधान के तृतीय वाचन के समय बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ने 'अन्ताहि अत्तनों नाथ कोहि नाथो परोसिया' का सुन्दर विश्लेषण विधान निर्मात्री–सभा के सामने प्रस्तुत किया था। बुद्ध के इस सूत्र का अर्थ है कि अपना स्वामी स्वयं बनो; कोई दूसरा पड़ोसी तुम्हारा हित करने वाला स्वामी नहीं हो सकता। बाबा साहब ने कहा था, 'यह बताने की जरूरत नहीं है कि इस देश में बहुत लोग (अछूत) केवल बोझ ढोने वाले पशु ही नहीं, अपितु शिकार किये जाने वाले पशु रहे हैं। इस इजारादारी ने उनको न केवल बेहतर जीवन से ही वंचित किया है बल्कि इसने उनका जीवनरस भी चूस लिया है। इन दबे–कुचले लोगों का मन अब अपने ऊपर दूसरों द्वारा राज्य किये जाने से भर चुका है। अब वे अपने ऊपर स्वयं ही राज्य करने के लिए बैचेन हैं।' इस समय तक देश और विदेश में बौद्ध धर्म के प्रति डॉ. अम्बेडकर की रूझान की चर्चा होने लगी थी। 1950 ई. में 'विश्व बौद्ध भ्रातृत्व सम्मेलन' का आयोजन श्रीलंका की राजधानी कोलम्बो में हुआ। इस सम्मेलन में बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर को आमंत्रित किया गया। इस विश्व बौद्ध सम्मेलन में उन्होंने जो भाषण दिया वह बौद्ध साहित्य के गहन अध्ययन का परिचायक था।

'बौद्ध धर्म का उदय' विषय पर प्रकाश डालते हुए डॉ. अम्बेडकर ने कहा, मैं इस बात हो नहीं मानता कि भारत का धर्म सदैव हिन्दू रहा है। हिन्दू धर्म तो भारत में सबसे बाद के सामाजिक विचारों का विकास है। वैदिक धर्म के प्रचार के बाद भारत में तीन बार धार्मिक परिवर्तन हुए। वैदिक धर्म, ब्राह्मण धर्म में बदला और ब्राह्मण–धर्म, हिन्दू धर्म में बदला। बौद्ध धर्म का आविर्भाव ब्राह्मण धर्म के समय हुआ। बौद्ध धर्म असमानता तथा समाज के विविध वर्णों में विभाजन के विरूद्ध था, जिसका पहले पहल ब्राह्मण धर्म ने सूत्रपात किया था। भारत में बौद्ध धर्म का उदय उतना ही महत्वपूर्ण था जितनी कि फ्रांस की महाक्रान्ति। धर्म वही हो सकता है तो मानव मात्र के लिए कल्याणकारी हो, जिसमें मानव मात्र के लिए उन्नति और विकास का द्वार खुला हो और भेदभाव न होकर मानवीय समता हो। जिस धर्म का मूल सिद्धान्त मानव समाज में भेद उत्पन्न करना है, उसे सद्धर्म नहीं कहा जा सकता। भगवान बुद्ध के धर्म का प्रधान लक्षण मानव–समता है। वह प्रत्येक व्यक्ति को अपनी बुद्धि से सोच–विचार कर किसी बात को स्वीकार करने या अस्वीकार करने का उपदेश देता है कि भारत में बौद्ध धर्म का उदय और फ्रांस की महाक्रान्ति दोनों युगान्तरकारी महत्वपूर्ग घटनाएँ हैं।

बौद्ध धर्म के प्रादुर्भाव के पहले यह सोचना भी संभव नहीं था कि भारत में शूद्र भी राजा हो सकता है, लेकिन भारतीय इतिहास के ज्ञाता जानते हैं कि बौद्ध धर्म के अभ्युदय के बाद शूद्रों के भी राज्य सिंहासन पर आसीन होने का अवसर प्राप्त हुआ। गणतन्त्रात्मक शासन प्रणाली भी बौद्ध काल की देन है। बौद्ध काल में भारत में स्थापत्यकला, चित्रकला, मूर्तिकला इत्यादि नाना प्रकार की कलाओं की उन्नति हुई। इस काल में भारतीय साहित्य और दर्शन की इतनी महती उन्नति हुई कि नाना देशों के विद्यार्थी यहाँ के तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने आये।

बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म के पतन के कारणों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि भगवान बुद्ध के श्रावक शिष्यों में लगभग 10 प्रतिशत ब्राह्मण थे। ब्राह्मण लोग भगवान बुद्ध से तर्क करने आते थे और निरुत्तर होकर प्रभावित और द्रवित हो उनके प्रति श्रद्धावनत होकर उनके धर्म में दीक्षित हो जाते थे। बौद्ध धर्म में जाति भेद न होने के कारण धीरे–धीरे जब निम्न जातियों के लोग भी बौद्ध धर्म ग्रहण कर सिद्ध–महात्मा बनने लगे और राजाओं तथा सेठों द्वारा उनका पूजा–सत्कार होने लगा तो यह बात ब्राह्मणों को बर्दाश्त नहीं हुई और वे बौद्ध धर्म का उच्छेद करने में लग गये। बौद्ध धर्म के पतन का दूसरा कारण सम्राट अशोक द्वारा कुल देवताओं का विरोध था। ग्राम, प्रदेश, वन, नदी आदि के देवी–देवताओं की भाँति राजा और सेठों के कुल देवता भी होते थे जिनके पुजारी ब्राह्मण पुरोहित होते थे। अशोक द्वारा प्रतिबन्ध के कारण पुरोहितों की बड़ी हानि हुई जिससे वे बौद्ध धर्म के विच्छेद में जुट गये। उन्होंने अपना वर्ण–धर्म छोड़कर सेना में भर्ती होना शुरू कर दिया। मौर्य साम्राज्य का, सेनापति पुष्यमित्र शुंग द्वारा ब्राह्मण साम्राज्य में परिवर्तन इसी का परिणाम था। इस ब्राह्मण साम्राज्य ने बौद्ध धर्म को अपरिमित हानि पहुँचायी।

बौद्ध धर्म की सर्वाधिक हानि विदेशी आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने की। उसने मूर्तियों को तोड़ा और भिक्षुओं को सैनिक समझकर संहार किया। बौद्ध–विहारों में आग लगा दी। नालन्दा विश्वविद्यालय को भी उसी ने भस्मसात् किया था जिसमें लगभग दो लाख पुस्तकें थी और छः हजार देश–विदेश के विद्यार्थी यहाँ अध्ययन कर रहे थे। उन्होंने आगे कहा, 'आज प्रतिमा, चैत्य, विहार और भिक्षु आदि की दृष्टि से बौद्ध धर्म भारत में नहीं है, परन्तु उसका आध्यात्मिक रूप आज भी भारत में व्याप्त है।' इस प्रकार उन्होंने भारत में बौद्ध धर्म के उत्थान और पतन का मार्मिक विश्लेषण प्रस्तुत किया जिसे सुनकर

बौद्ध विद्वानों को दाँतों तले उंगली दबानी पड़ी। श्रीलंका में घूम–फिर कर बाबा साहब ने बौद्ध धर्म के व्यावहारिक पहलू को देखा और समझा। भिक्षुचर्या का भी बारीकी से अध्ययन किया।

डॉ. अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म को सामाजिक एवं भौतिक दृष्टि से तौलने का प्रयत्न किया, क्योंकि आवश्यकता सामाजिक संगठन एवं सामंजस्य की थी, न कि शास्त्रीय विवाद की। उन्होंने अपने बौद्धि क्षेत्र में, बौद्ध धर्म के परम्परावादी चार सम्प्रदायों – वैभाषिक, सौत्रान्तिक, योगाचार एवं माध्यमिक को सम्मिलित नहीं किया। हीनयान एवं महायान सम्प्रदायों को भी उन्होंने पृथक् ही रखा। उन्होंने शायद बौद्ध धर्म को एक सामाजिक सन्देश बनाने के लिए इन सब बातों की आवश्यकता समझी, वास्तव में, उन्होंने उनके धर्म को एक सामाजिक सिद्धान्त के रूप में रखा। बौद्ध धर्म मूलतः एक महान् समाज दर्शन ही है। परम्परा के आधार पर हीनयान सम्प्रदाय 'व्यक्तिगत मुक्ति' पर बल देता है, जबकि महायान सम्प्रदाय 'सार्वभौमिक कल्याण' को सर्वोपरि मानता है। दूसरे शब्दों में, हीनयान दर्शन में व्यक्तिगत हित ही जीवन का मुख्य उद्देश्य है और महायान दर्शन में लोकहित जीवन का महान् उद्देश्य है। दोनों ही अपने–अपने मत को ठीक एवं उच्च मानते हैं। यह सैद्धान्तिक विवाद के अलावा कुछ नहीं है, हालांकि विरोधात्मक विचार झलकते ही हैं। डॉ. अम्बेडकर इस विवाद में नहीं पड़े। उनके दर्शन में व्यक्तिगत हित एवं लोकहित दोनों का समन्वय है, जो उनके मानववादी विचारों पर आधारित है। उनका मानववादी दर्शन सामान्य शुभ को सर्वोपरि मानता है। उनका मानववाद सब व्यक्तियों के भौतिक एवं आध्यात्मिक कल्याण के लिए है। यही कारण है कि वह जीवन–संघर्ष के उस सिद्धान्त में विश्वास नहीं करते थे जो असमता को जीवित रहने का आधार मानता है। वह तो नैतिक चुनाव में अधिक विश्वास रखते थे। समाज में रहने वाले दुर्बल, किन्तु उत्तम पुरुषों की भलीभाँति सुरक्षा की

जानी चाहिए, ताकि सभी लोगों के नैतिक सम्बन्ध दृढ़ हों। डॉ. अम्बेडकर के अनुसार समाज में उत्तम एवं उपयुक्त दोनों को जीवित रहने का अधिकार है। वह समता एवं स्वतंत्रता को अधिक महत्व देते थे। समाज में अच्छी तरह जीवित रहने का अधिकार तो सभी को होना चाहिए। डॉ. अम्बेडकर सभी वर्तमान एवं भूतकालीन ज्ञान को मनुष्य के दृष्टिकोण से देखते थे। वह ज्ञान, जो मानव–समस्याओं का निराकरण नहीं करता, महत्वहीन है। मनुष्य की भलाई से सम्बन्धित ज्ञान, चाहे किसी भी क्षेत्र में हो, प्रशंसनीय है। मानववादी होने के नाते डॉ. अम्बेडकर ने किसी अन्य धर्म को नष्ट करने की बात नहीं सोची। वह सभी महान् धार्मिक शिक्षकों की शिक्षाओं का स्वागत करते थे। उनमें से जो कुछ मानव–समाज के लिए हितकर है, वह सहर्ष स्वीकार कर लेते थे। वह एकांगी जीवन में विश्वास नहीं करते थे। आत्म–विकास एवं आत्मोन्नति में जो कुछ सहायक है, वह मान लेते थे।

अम्बेडकर बौद्ध धर्म को अन्य धर्मों की तुलना में ज्यादा अच्छा समझते थे। उनका मानना था कि बौद्ध धर्म ने समाज के पुनर्निर्माण के लिए तीन बुनियादी सिद्धान्त निर्धारित किए हैं, जो निःसन्देह वर्तमान परिस्थितियों में महत्वपूर्ण हैं। यथा –

1. प्रज्ञा – प्रज्ञा का अर्थ है मनुष्य की विवेक–शक्ति। यह अंधविश्वासों और चमत्कारों के विरोध में होती है।
2. करूणा – यह प्राणिमात्र के प्रति प्रेम का भाव है।
3. समता – यह सभी मनुष्यों को एक–जैसा समझने का भाव है।

डॉ. अम्बेडकर भारतीय इतिहास में क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति का विश्लेषण करते हुए कहते हैं, 'बौद्ध धर्म एक क्रान्ति था। यह बौद्ध क्रान्ति, फ्रान्स की क्रान्ति के समान ही एक महान क्रान्ति थी। यद्यपि इसका प्रारम्भ

एक धार्मिक क्रान्ति के रूप में हुआ। लेकिन बाद में सामाजिक एवं राजनैतिक क्रान्ति हो गयी।'

अन्ततः डॉ. अम्बेडकर बौद्ध धर्म विषयक विचार प्रेम, सद्भावना, ईमानदारी, दया, सत्य, न्याय, निष्पक्षता, बौद्धिकता, सम्मान, समता, स्वतन्त्रता और भ्रातृत्व पर अधिक बल देते हैं, जिनकी आज अत्यधिक आवश्यकता है, क्योंकि ये वे मूल्य हैं जो मनुष्य–मनुष्य के बीच आध्यात्मिक चेतना एवं समत्व–भाव का विकास कर सकते हैं। इन्हें पुनर्जीवित करने में डॉ. अम्बेडकर का योगदान महनीय है।